Anveshan (अन्वेषण): A Multidisciplinary Journal in Hindi
Vol. 3, Issue 1 – 2019

ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति और शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

अभिषेख कुमार पाण्डेय*, डॉ० रघुराज सिंह**

प्रस्तावना

शिक्षा के रूप में विद्यार्थी जीवन का व्यवहार ज्ञान एवं कला कौशल में वृद्धि एवं परिवर्तन किया जाता है। विल्सन एच० एफ० (1976) ने अपने अध्ययन में पाया कि विद्यार्थियों में अधिगम के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोंण एवं उसकी उच्चतम शैक्षिक उपलब्धि उनके माता–पिता और अभिभावक की उनके शैक्षिक कार्यों में हो रहे रूचि से जुड़ी हुई हैं। माध्यमिक विद्यालय में विद्यार्थियों ने कितना ज्ञान अधिग्रहित किया हैं इसका पृष्ठपोषंण शैक्षिक उपलब्धि द्वारा ही लगाया जा सकता हैं। शैक्षिक उपलब्धि उन विद्यार्थियों द्वारा अधिगम किये गये एवं प्रयोग में लाये गये ज्ञान को मापने का सर्वोत्तम साधन हैं। तथा यह उनके पारिवरिक तथा सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि पर पुर्णतया निर्भर करता है। विद्यार्थियों के नैतिकता, सामाजिक मूल्यों में गिरावट का प्रभाव शिक्षा में देखने को मिलता हैं। जिसमें मुर्त या अमुर्त रूप से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती हैं। विद्यार्थियों को प्रत्येक क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा व तनावपूर्ण प्रस्थिति का सामना करना पड़ता हैं। इसमें सफलता हेतु आवश्यक हैं कि वह अपने व्यवहारों को शैक्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु निर्मित करें। अतः विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास में शैक्षिक उपलब्धि, सामाजिक आर्थिक स्थिति और उससे सम्बन्धित चरों का महत्वपूर्ण स्थान हैं। शैक्षिक उपलब्धि के संन्दर्भ में रेखा (1996) द्वारा किए गये शोधकार्यों में निष्कर्ष के रूप में पाया गया कि परिवार के सभी सदस्यों द्वारा प्रदान किया गया निर्देशन व पथ प्रदर्शन विद्यार्थियों के अच्छे शैक्षिक दृष्टिकोंण एवं शैक्षिक उपलब्धि में अपना योगदान केता हैं। उपलब्धि से तात्पर्य किसी भी क्षेत्र में अर्जित ज्ञान से नहीं हैं अपितु सामान्यतः हम उपलब्धि को शैक्षिक क्षेत्र में ही देख सकते हैं। लेकिन यह जीवन के सभी क्षेत्रों से सम्बन्धित होती हैं। अतः शैक्षिक उपलब्धि का तात्पर्य विद्यार्थियों द्वारा कक्षाकक्ष में विभिन्न विषयों में प्राप्त प्रतिफलों से नहीं है अर्थात् शैक्षिक उपलब्धि विद्यालय में कक्षाकक्ष में विद्यार्थियों के अध्ययन विषय के प्रति अर्जित शैक्षणिक ज्ञान से हैं।

ज्ञानानी (2005) ने अपने अध्ययन में पाया की माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों को मिलने वाली अभिप्रेरणा तथा उनकी शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर होता हैं। और इनके अनुसार मनुष्य को सफल विद्यार्थी बनाने में समाज का सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। समान भौतिक साधनों के होते हुए भी यदि किसी विद्यार्थी को समाज का सम्पर्क नहीं मिलता तो उनका विकास न होकर पशुवत बन कर रह जाता है। आज का विकसित प्राणी सदियों की सामाजिक गतिशीलता का ही परिणाम है।

*शोध छात्र, पंजीकरण. संख्या–NGB–15–D/TED–030, शिक्षक शिक्षा संकाय, नेहरु ग्राम भारती मानित विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
**शोध पर्यवेक्षक, शिक्षक शिक्षा संकाय, नेहरु ग्राम भारती मानित विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
Correspondence E-mail Id: editor@eurekajournals.com

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. **ISSN: 2581-4044**

भारतीय समाज स्वतन्त्रता से पूर्व सदियों की सामाजिक गतिहीनता की भयावह परिस्थितियों का प्रत्यक्ष अनुभव कर चुका है। इस वर्तमान काल में वह प्राणी उन्नति करने के स्थान पर अवनति की राह पर विराजमान हैं। अतः यह इस बात का प्रत्यक्ष रुप में एक प्रमाण है, कि विद्यार्थियों के व्यक्तित्त्व का निर्माण करता है। और सामाजिक गतिशीलता उसको विकसित और परिभाषित करती रहती है।

शोध कर्ता द्वारा इस माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों के सामाजिक आर्थिक प्रस्थिति के परिप्रेक्ष्य में शैक्षिक उपलब्धि पर अध्ययन विषय पर शोध करने की आवश्यकता इस लिए महसूस हुई क्योंकि वर्तमान प्रस्थिति में माध्यमिक विद्यालय के सभी विद्यार्थियों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति एक जैसी नहीं होती हैं जिससे उनके शैक्षिक उपलब्धि पर एक जैसा प्रभाव पड़े। अतः सामाजिक–आर्थिक स्थितियों का उनके शैक्षिक उपलब्धि कैसा प्रभाव पड़ रहा हैं। यह जानने की उत्सुकतता जागृत हुयी।

शोध समस्याः

ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक प्रस्थिति और जाति विशेष का शैक्षिक उपलब्धि पर क्या प्रभाव पड़ रहा है?

शोध शीर्षकः

"ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति और शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन।"

शोध के चर

प्रस्तुत शोध में स्वतंत्र चर के अंतर्गत सामाजिक आर्थिक स्थिति, जाति तथा परतंत्र चर के अंतर्गत शैक्षिक उपलब्धि निर्धारित किया गया है।

पारिभाषिक शब्दावली

सामाजिक आर्थिक प्रस्थितिः सामाजिक आर्थिक प्रस्थिति दो प्रस्थिति जो क्रमशः सामाजिक और आर्थिक स्थिति का समन्वय है। जो व्यक्ति जिस समाज में रहता है उसमे उसकी सामाजिक सांस्कृतिक तथा भौतिक स्थिति यथा आय जाति, समाज में सम्मान, शक्ति व प्रभाव आदि के आधार पर उसे एक विशेष संस्थिति प्रदान करती है। सामाजिक आर्थिक स्थिति के अंर्तगत विद्यार्थियों की जाति आते हैं।

माध्यमिक विद्यालयः माध्यमिक विद्यालय से तात्पर्य ग्रामीण क्षेत्र के यू०पी० तथा सी०बी०एस०ई० बोर्ड द्वारा संचालित राजकीय, वित्तपोषित और स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालय जिसमे कक्षा 9 तथा 12 तक की पढाई होती है।

विद्यार्थीः विद्यार्थी से तात्पर्य जनपद के यू०पी० तथा सी०बी०एस०ई० बोर्ड द्वारा संचालित ग्रामीण क्षेत्र के राजकीय माध्यमिक विद्यालय, वित्तपोषित माध्यमिक विद्यालय, तथा स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत कक्षा 9वीं व 11वीं के सभी विद्यार्थी से हैं।

शैक्षिक उपलब्धिः शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य कक्षा 9वीं व 11वीं के वे सभी विद्यार्थी जिनका क्रमशः कक्षा 8 और कक्षा 10 के वार्षिक परीक्षा के मूल्यांकन से प्राप्त प्रतिशत में परिणाम से है।

शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध हेतु निम्नलिखित उद्देश्यों का निर्माण किया गया है।

1. वाराणसी जनपद के यू०पी० तथा सी०बी०एस०ई० बोर्ड द्वारा संचालित ग्रामीण क्षेत्र के राजकीय, वित्तपोषित और स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत कक्षा 9वीं व 11वीं के

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. ISSN: 2581-4044

विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर सामाजिक आर्थिक प्रस्थिति के प्रभाव का अध्ययन करना ।

2. वाराणसी जनपद के यू०पी० तथा सी०बी०एस०ई० बोर्ड द्वारा संचालित ग्रामीण क्षेत्र के राजकीय, वित्तपोषित और स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत कक्षा 9वीं व 11वीं के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर जातिगत प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध सीमांकन

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने अपने शोध को समय, धन एवं श्रम शक्ति तथा महत्व को ध्यान में रखते हुये शोघ अध्ययन को निम्न प्रकार से सीमांकित करने का प्रयास किया है:

1. उत्तर प्रदेश के केवल वाराणसी जनपद में स्थित ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालय के अध्ययनरत 9वीं व 11वीं में छात्र और छात्राओं तक ही सीमित किया गया है।
2. माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की सामाजिक–आर्थिक प्रस्थिति तक सीमित किया गया है।
3. माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि तक सीमित किया गया है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध हेतु वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया हैं।

शोध जनसंख्या

प्रस्तुत शोध अध्ययन में जनसंख्या के अंतर्गत वाराणसी जनपद के ग्रामीण और शहरी क्षेत्र में आने वाले यू०पी० तथा सी०बी०एस०ई० बोर्ड द्वारा संचालित राजकीय, वित्तपोषित और स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत कक्षा 9 तथा 11 के किशोर और किशोरी विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में लिया गया है।

शोध न्यादर्श

शोधकर्ता ने न्यादर्श के अंतर्गत वाराणसी जनपद के ग्रामीण क्षेत्र में आने वाले यू०पी० तथा सी०बी०एस०ई० बोर्ड द्वारा संचालित राजकीय, वित्तपोषित और स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत कक्षा 9 तथा 11 से 360 विद्यार्थियों का चयन किया हैं।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण

- प्रस्तुत शोध के अंतर्गत स्वतंत्र चर के रूप में शहरी क्षेत्र में सामाजिक आर्थिक प्रस्थिति के मापन के लिए ग्रामीण क्षेत्र के सामाजिक–आर्थिक प्रस्थिति के मापन के लिए डॉ बी०के०सिंह और साबित्री शर्मा द्वारा मानकीकृत सामाजिक–आर्थिक प्रस्थिति मापनी का प्रयोग किया गया है।
- प्रस्तुत शोध अध्ययन के अंतर्गत परतंत्र चर के रूप में ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि ज्ञात करने के लिए 9वीं एवं 11वीं कक्षा के वार्षिक और अर्धवार्षिक परीक्षा का औसत प्रतिफल का प्रतिशत लिया गया है।

शोध अध्ययन हेतु प्रयुक्त सांख्यिकीय विधि

- शोधकर्ता द्वारा वर्तमान अध्ययन के उद्देश्यों को पूरा करने के लिये माध्य, प्रमाणिक विचलन, मध्यमान की सार्थकता की जॉच हेतु एनोवा द्विमार्गी परीक्षण का प्रयोग किया गया।
- प्रस्तुत शोध में एफ अनुपात की गणना के लिये सार्थकता स्तर की जॉच हेतु विश्वास स्तर 0.05 का प्रयोग किया गया है।

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. ISSN: 2581-4044

प्रदत्तों का संकलन, प्रदत्तों का विश्लेषण, प्रदत्तों का व्याख्या

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

प्रस्तुत अध्याय में प्रदत्तों का विश्लेषण सारणीयन एवं निर्वचन व्याख्या सहित प्रस्तुतीकरण किया गया है। सम्बन्धित परिकल्पनाओं की व्याख्या एवं विश्लेषण उद्देश्यों के अनुसार क्रमशः निम्नलिखित हैं:–

प्रथम उद्देश्य ''वाराणसी जनपद के यू.पी तथा सी.बी.एस.ई बोर्ड द्वारा संचालित ग्रामीण क्षेत्र के राजकीय, वित्तपोषित और स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत कक्षा 9वीं व 11वीं के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर सामाजिक आर्थिक प्रस्थिति के प्रभाव का अध्ययन करना।'' की प्राप्ति हेतु सारणी, विश्लेषण एवं व्याख्या निम्नलिखित है:–

शून्य परिकल्पना

वाराणसी जनपद के यू०पी० बोर्ड और सी०बी०एस०ई० बोर्ड द्वारा संचालित ग्रामीण क्षेत्र के राजकीय, वित्तपोषित और स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत कक्षा 9 व 11 के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर सामाजिक आर्थिक प्रस्थिति (SES) के प्रभाव का तुलनात्मक रुप में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका संख्या 1.द्विमार्गी प्रसरण विश्लेषण

परतंत्र चरः शैक्षिक उपलब्धि					
श्रोत	Type III SS	df	MS	F	Sig.
CORRECTED MODEL	24.511[a]	19	1.290	4.774	.000
INTERCEPT	547.438	1	547.438	2025.826	.000
SES*SCHOOL*BOARD	24.511	19	1.290	4.774	.000
ERROR	91.878	340	.270		
CORRECTED TOTAL	116.389	359			
TOTAL	2730.000	360			
R Squared = .211 (Adjusted R Squared = .166)					

निर्वचन व्याख्या

उपर्युक्त तालिका संख्या 1 में ग्रामीण क्षेत्र के यू०पी० बोर्ड और सी०बी०एस०ई० बोर्ड द्वारा संचालित राजकीय माध्यमिक विद्यालय, वित्तपोषित माध्यमिक विद्यालय और स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके सामाजिक आर्थिक स्थिति के प्रभाव का परीक्षण के दौरान प्राप्तः

- प्रथम एफ मान 4.774 दिये गये मुक्तांश मान 19, 340 के सारणी मान 0.05 विश्वास स्तर पर सार्थकता स्तर मान 1. 92 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है।
- द्वितीय एफ मान 2025.826 दिये गये मुक्तांश मान 1, 340 के सारणी मान 0. 05 विश्वास स्तर पर सार्थकता स्तर मान 6.70 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है।
- अतः तृतीय एफ मान 4.774 दिये गये मुक्तांश मान 1, 340 के सारणी मान 0. 05 विश्वास स्तर पर सार्थकता स्तर मान 1.92 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

अतः प्राप्त परिणामों द्वारा यह स्पष्ट होता है कि वाराणसी जनपद के ग्रामीण क्षेत्र के यू०पी० बोर्ड और सी०बी०एस०ई० बोर्ड द्वारा संचालित राजकीय, वित्तपोषित और स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालय के वे सभी

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. ISSN: 2581-4044

विद्यार्थी जिनका सामाजिक आर्थिक स्थिति अति निम्न, निम्न, निम्न–मध्यम, मध्यम–उच्च तथा उच्च है उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी उसी के अनुरुप पाया गया। अर्थात ग्रामीण क्षेत्र के भिन्न भिन्न सामाजिक आर्थिक स्थिति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि भिन्न है।

द्वितीय उद्देश्य ''वाराणसी जनपद के यू०पी० बोर्ड और सी०बी०एस०ई० बोर्ड द्वारा संचालित ग्रामीण क्षेत्र के राजकीय, वित्तपोषित और स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत कक्षा 9वीं व 11वीं के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर जातिगत प्रभाव का अध्ययन करना है।'' की प्राप्ति हेतु सारणी, विश्लेषण एवं व्याख्या निम्नलिखित हैः–

शून्य परिकल्पना

वाराणसी जनपद के यू०पी० बोर्ड और सी०बी०एस०ई० बोर्ड द्वारा संचालित ग्रामीण क्षेत्र के राजकीय, वित्तपोषित और स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत कक्षा 9वीं व 11वीं के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर जातिगत प्रभाव का तुलनात्मक रुप में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका संख्या 2.द्विमार्गी प्रसरण विश्लेषण

परतंत्र चर–शैक्षिक उपलब्धि					
Source	Type III SS	df	MS	F	Sig.
Corrected Model	38.965[a]	59	.660	2.559	.000
Intercept	848.374	1	848.374	3287.273	.000
CAST*SCHOOl*BOARD	38.965	59	.660	2.559	.000
Error	77.424	300	.258		
Total	2730.000	360			
Corrected Total	116.389	359			
a. R Squared = .335 (Adjusted R Squared = .204)					

निर्वचन व्याख्या

उपर्युक्त तालिका संख्या 2 में ग्रामीण क्षेत्र के यू०पी० बोर्ड और सी०बी०एस०ई० बोर्ड द्वारा संचालित राजकीय, वित्तपोषित और स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत कक्षा 9वीं व 11वीं के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर जातिगत प्रभाव का परीक्षण के दौरान प्राप्तः

- प्रथम एफ मान 2.559 दिये गये मुक्तांश मान 59, 300 के सारणी मान 0.05 विश्वास स्तर पर सार्थकता स्तर मान 1. 57 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है।
- द्वितीय एफ मान 3287.273 दिये गये मुक्तांश मान 1, 300 के सारणी मान 0. 05 विश्वास स्तर पर सार्थकता स्तर मान 6.70 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है।
- अतः तृतीय एफ मान 2.559 दिये गये मुक्तांश मान 59, 300 के सारणी मान 0. 05 विश्वास स्तर पर सार्थकता स्तर मान 1.57 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

अतः प्राप्त परिणामों द्वारा स्पष्ट होता है कि वाराणसी जनपद के यू०पी० बोर्ड और सी०बी०एस०ई० बोर्ड द्वारा संचालित ग्रामीण क्षेत्र के राजकीय माध्यमिक विद्यालय, वित्तपोषित माध्यमिक विद्यालय और स्ववित्तपोषित माध्यमिक विद्यालय के वे सभी विद्यार्थी जिनका जातिगत स्थिति जैसे, सामान्य जाति, पिछड़ी जाति और अनुसूचित जनजाति है उनके शैक्षिक उपलब्धि में अंतर

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. ISSN: 2581-4044

भी उसी के अनुरुप पाया गया। अर्थात ग्रामीण क्षेत्र के भिन्न भिन्न जातिगत स्थिति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि भी भिन्न–भिन्न है।

शोध निष्कर्ष

- ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों की भिन्न भिन्न सामाजिक आर्थिक स्थिति का प्रभाव शैक्षिक उपलब्धि पर भिन्न भिन्न है।
- ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों की भिन्न भिन्न जातिगत स्थिति का प्रभाव शैक्षिक उपलब्धि पर भिन्न–भिन्न है।

शैक्षिक निहितार्थ

- ऐसे विद्यार्थियों के माता पिता या अभिभावक जो कम पढ़ें लिखे है उनके लिये अलग से प्रत्येक रविवार या अवकाश के दिन विद्यार्थियों की शिक्षा में आने वाले अवरोधों के प्रति जागरुकता प्रदान किया जा सकता है।
- आज के समय का सबसे महत्वपूर्ण कारक परिवार की आर्थिक आाय है। जों विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती है। अतः कोई भी विद्यार्थी तभी शिक्षा प्राप्त कर सकता है जब तक कि उसकी मूलभूत जैविक आवश्यकतायें पूरी हो ना जाये। अतः शैक्षिक संस्थानो को ऐसे विद्यार्थियों को चिन्हित कर आर्थिक क्षति पूर्ति हेतु वजीफा प्रदान करे ताकि प्रत्येक विद्यार्थी को समावेशी शिक्षा प्राप्त हो सके और वे विद्यालय में पुर्णतया समायोजित हो सके।

भावी शोध हेतु सुझाव

शोधकर्ता द्वारा भावी शोध हेतु सुझाव निम्न बिन्दुओं द्वारा प्रस्तुत किया गया।

- प्रस्तुत शोधप्रबन्ध में शोधकर्ता ने आकड़ों के विश्लेषण और व्याख्या में द्विमार्गी प्रसरण विश्लेषण का प्रयोग किया है। यदि भविष्य में द्विमार्गी प्रसरण विश्लेषण के प्रयोग के पश्चात विश्लेषणोपरांत परीक्षण का किया जाय तो और आंतरिक गहन परिणाम प्राप्त किया जा सकता है।
- प्रस्तुत शोध प्रबन्ध को शोधकर्ता ने वाराणसी जनपद के ग्रामीण और शहरी क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों पर शोधकार्य किया है। भविष्य में इससे सम्बन्धित अन्य शोध कार्य मण्डल या राज्य स्तर पर किया जाय सकता है। जिससे और आंतरिक परिणाम प्राप्त कर सके।
- प्रस्तुत शोध अध्ययन में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया हैं। भविष्य में उच्च शैक्षिक स्तर के विद्यार्थियों पर भी शोध कार्य किया जा सकता हैं।
- भावी शोध में भौगौलिक, राजनैतिक, तथा धार्मिक कारणों को भी शामिल किया जा सकता है।
- भावी शोध में माध्यमिक स्तर पर अन्य चरों जैसे व्यक्तित्व, प्रेरणा को भी शामिल किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[1]. कुमार, संदीप. (2016). उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन तथा तर्कक्षमता का एक अध्ययन, शैक्षिक परिसंवाद, ऐन इंट्रोडक्सन ऑफ एजुकेशन, वाल्युम 6 संख्या 2 जुलाई 2016, बनारस हिंदु यूनिवर्सिटी।

[2]. कुमार, रोहित. (2019). माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों का तुलनात्मक अध्ययन, एजुकेशन फार आल, वाल्युम 9, संख्या 1, जन–

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. ISSN: 2581-4044

दिसम्बर 2019, ए०पी०एच० पब्लिकेशन।

[3]. जैन, रितेश. (2015). अनुसुचित जनजाति के बच्चों की पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन, अध्यापक सारथी, वाल्युम 4 संख्या 3 सिप्तम्बर–दक्षिण 2015, दिल्ली।

[4]. टी0एम0 न्यूकॉम. (1997). "पर्सनालिटी एण्ड सोशल चेन्ज", न्यूयार्क, ड्राई एण्ड प्रेस।

[5]. टी0डब्ल्यू0 एडोर्ने, एम0 फैंकल, ब्रन्सेविक, डी0जे0 लेविनसन एण्ड आर0एन0 सेनफोर्ड, 1950,"द ऑरीटेरियन पर्सनालिटी", न्यूयार्कः हारपर।

[6]. टी0एस0 एप्सटीन. (1974). "सोशल चेन्ज एज रिफ्लैक्टिड इन विपेज एण्ड अरबन स्ट्डीज", ए सर्वे ऑफ रिसर्च इन सोशियोलॉजी एण्ड सोशल एन्थ्रोपोलॉजी, वोल्यूम 1, पृष्ठ 285–286.

© Eureka Journals 2019. All Rights Reserved. ISSN: 2581-4044